

## मीरा की भक्ति परक विरहानुभूति

डॉ. रमेश कुमार कोरी

अतिथि प्राध्यापक-हिन्दी

नवीन शासकीय महाविद्यालय कीलेपाल जिला बस्तर (छ. ग.)

Received– 28 September - 2026

Accepted– 29 September - 2026

Published– 30 September-2026

Corresponding Author-

डॉ. रमेश कुमार कोरी

अतिथि प्राध्यापक-हिन्दी

नवीन शासकीय महाविद्यालय कीलेपाल जिला बस्तर (छ. ग.)

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041520>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

© 2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



प्रिय मिलन की व्यवधान दशा में मनुष्य के हृदय में जो वेदना उद्भूत होती है, उसे सभी प्रेमी हृदय समझते हैं। मिलना बिछुड़ना जगत गति है। प्रेम की प्रारम्भिक स्थिति से ही प्रिय की समीपता की तीव्र भावना उत्पन्न होने लगती है। जब प्रेम की प्रारम्भिक शुरुआत होती है। तब दोनों नायक-नायिका में व्याकुलता वर्तमान रहती है। किन्तु मिलन के पश्चात जिस विरहानुभूति का जन्म लेता है। वह मिलन के अनुभवों से गहरा संबंध होने का कारण अधिक दुखदायी होता है। मिलन की अनुभूतियों की तीव्रता वियोग काल में घातक स्थिति तक पहुँच जाती है। संयोग के समय जो उपादात सुखकर होते हैं, वे विप्रलम्भ की स्थिति में बैरी के रूप में दिखने लगते हैं, यहाँ तक की सहज बातें भी उल्टी प्रतीत होने लगती हैं। हमारे संस्कृत के विशाल वाङ्मय में ऐसे वियोग की पर्याप्त चर्चा हुई है। जयदेव से लेकर विद्यापति, मूर, बिहारी और छायावादी कवियों तक में ऐसा विरह का चित्रण और अंकन होता आया है। विरह स्वयं में दुखदायी है। दुख की तमाम स्थितियाँ इसकी व्याप्ति में आती हैं। शास्त्रकारों ने विरह की विभिन्न परिस्थितियों की चर्चायें की हैं। कोई जरूरी नहीं कि किसी एक विरही को तमाम परिस्थितियाँ तय करनी पड़ती हैं किन्तु जिसमें जितनी संवेदनशीलता की मात्रा होगी, उस स्थिति तक उसे तय करना पड़ सकता है।

साहित्य में मिलन की अपेक्षा विरह का अधिक महत्व है। विरह के माध्यम से सच्चा कवि जीवन के असह्य क्षणों का अनुभव करता है। व्यक्ति विरह को सच्चा प्रेम मानता है। सच्चा श्रेणी प्रिय में केन्द्रित होकर भी हृदय से व्यापक होता है। वस्तुतः कविता का जन्म ही करुणा/अवसाद/विरह में हुआ। मीरा के प्रेम

की दूसरी अवस्था विरह का वर्णन उनके पदों में बड़ी तन्मयता एवं गहरी व्याकुलता लिए हुए मिलता है परशुराम चतुर्वेदी का मानना है कि मीरा की विरह वेदना में आन्तरिक वेदना का वर्णन कम होने से शारीरिक पक्ष गौण ही समझा जा सकता है। मीरा को विरह वेदना के मानसिक कष्टों में अनूठा और वास्तविक वर्णन है। मीरा के पदों में जो पीड़ा व्यक्त हुई है। उसमें व्यग्रता एवं विवशता से भरी मर्मन्तक वेदना का रूप स्वभाविक बन पड़ा है। मीरा की विरह वेदना आध्यात्मिक धरातल पर प्रतिष्ठित होने के कारण लौकिक वेदना से भिन्न अनुभूति तैरती दिखाई देती है।

“स्याम विणा सखि रया णा जावौं।टेक।।

तण मण जीवण प्रीतम वारस्यौं, थारे रूप लुभावौं।

खाण पाण म्हाणे फीकाँ लागौं, नैण रहाँ मुरझावौं।

णिस दिन जोवाँ बाट मुरारी, कबरी दरसण पावौं।

बार बार थारी अरजाँ करस्यौं रैण गवाँ दिन जावौं।

मीराँ रे हरि थे मिल्या विण, तरस तरस जीया जावौं।।”

विरह प्रेम की कसौटी है। प्रेम का सात्विक रूप विरह ही है जबकि संयोग प्रेम का राजस रूप है। संयोग में प्रेमी वासना में उतर जाते हैं, जबकि वियोग में वह वासना से ऊपर उठकर आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त कर लेता है। प्रेम में कितनी निष्ठा, आतुरता, तीव्रता और चाह इसका ज्ञान विरह से ही होता है। विरह प्रेम की दृढ़ता का परिचायक है। विरह की ज्वाला ही इन्हें जीवनी शक्ति देती है। इसके बिना वे जीवन को राख का घर समझती हैं। जीवन की यह विरह रात्रि कवयित्री को प्रकाशवान दिखायी पड़ती है। क्योंकि विरह में उसका रोम-रोम प्रिय स्मरण रूप जागरण से आप्लुत हैं। पीर जीवन की रूपाशक्ति प्रेम की जननी होती है और प्रेम वह पीर है जिसे वही व्यक्ति अनुभव कर सकता जिसे पीड़ा से वास्ता पड़ा तो या घाव होता हो तो बाहर से कुछ भी दिखाई नहीं देता लेकिन अन्दर ही अन्दर रोम-रोम में रिसता रहता है, मीरां कहती हैं-

“लागी सो ही जाणै, कठण लगण दी पीर।

विपत पड़्याँ कोई निकटि न आवै, सुख में सबको सीर।

बाहिर घाव कुछ नहिं दीसै, रोम-रोम दी पीर।

जन मीरां गिरधर के ऊपर सदकै करूँ सरीर।”

मीरां के प्रेम की विरह का प्रदर्शन विप्रलम्भ शृंगार ही जैसा हुआ है। किन्तु उसमें आन्तरिक वेदना का समावेश अधिक होने से मानसिक पक्ष की प्रधानता है। शारीरिक तापादि का वर्णन कम होने से शारीरिक पक्ष गौण समझा जा सकता है। शारीरिक कष्टों की तीव्रता एवं असहायता का प्रदर्शन अधिकतर परम्परानुसार हैं, परन्तु स्वानाभूति के कारण, उसमें भी उतनी अस्वाभाविक नहीं जान पड़ती। मानसिक कष्टों का वर्णन प्रायः सभी अनूठे और स्वाभाविक है। उनमें प्रायः कहीं व्यग्रता एवं विवशता से भरी हुई मर्मन्तक वेदना की एक सच्ची कहानी सुन पड़ती है। उनका विश्वास संगीती प्रभु श्नेहडौं लगाकर चला गया है। उन्हें प्रेम की बाती बारकर एवं श्नेह की नाव-चलाकर विरह समुद्र में छोड़ दिया है। उसके बिना उन्हें रहा ही नहीं जाता-

“डारि गयो मनमोहन पासी।

आँबाँ की डालि कोइल एक बोले,

मेरी मरण अरु जग केरी हाँसी।

बिरह की मारी मैं बन डोलूँ,

प्राण तजूँ करवत ल्यूँ कासी।

मीरां रे प्रभु हरि अविनासी,

तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी।”

मीरांबाई के प्रेम की अवस्था व विरह का प्रदर्शन विप्रलम्भ शृंगार ही जैसा हुआ है, किन्तु उसमें आन्तरिक वेदना का समावेश अधिक होने से मानसिक पक्ष की प्रधानता है। शारीरिक तापादि का वर्णन कम होने से शारीरिक पक्ष सामान्य समझा जा सकता है। शारीरिक कष्टों की तीव्रता एवं असहायता का प्रदर्शन

अधिकतर परम्परानुसार है। मीरां ने अपने पदों में एकाध स्थान पर ऐसी उक्तियाँ ही लिखी हैं, जिनको यदि प्रमुखता दी जाए तो यह भ्रम होता है कि विरह जैसी दुखदायी स्थिति का उन्हें सामना नहीं करना पड़ा होगा-

“जियरो पिया परदेस बस्याँ री ड़िख-ड़िख भेज्याँ पाती।

म्हारा पिया म्हारे हियड़े बसता ना आवा ना जाती।

म्हारो प्रीतम हिरदाँ बसताँ, दरस लहयाँ सुखरासी।

मीरां रे प्रभु हरि अविनासी, सरण गहयाँ थें दासी।।”

सच्चा प्रेमी मिलन के लिए समुत्सुक नहीं होता। मिलन में वह तड़प वह विह्वलता, वैसी तीखी तृषा, चिरंतन ज्वाला कहाँ? मिलन के एक उद्दाम आवेग में सारी आकुलता, प्रेमी की प्रबलता और उत्सुकता शीतल हो जाती है। दूध की उफान में ठण्डे छींटे पड़ जाते हैं। मीरां के विरह में प्रिय का जो रूप सामने आता है। उससे यही लगता है कि वह कहीं चला गया है, कहकर नहीं आया है, किसी दूसरे के घर चला गया है और वह प्रियतम आया आगन में घूमकर लौट गया, जब वह आया तो अभागिन विरहिणी सो गई। मीरां ने प्रिय के लिए अपने पदों में जोगी को संबोधित किया है कि जोगी कौन हैं?

“जोगिया से प्रीति किया दुःख होई।

प्रीत कियाँ सुख न मोरी सजनी, जोगी मित न कोई।

रात दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियाँ बिन मोई।

ऐसो सूरत या जग माँही, फेरि न देखी सोई।

मीरां रे प्रभु कब रे मिलोगे, मिलियाँ आँणद होई।।”

\*\*\*\*\*

संदर्भ सूची :-

1. चतुर्वेदी, परशुराम. मीरांबाई की पदावली, पृ. 47
2. चतुर्वेदी, परशुराम. मीरांबाई की पदावली, पृ. 116
3. चतुर्वेदी, परशुराम. मीरांबाई की पदावली, पृ. 142
4. चतुर्वेदी, परशुराम. मीरांबाई की पदावली, पृ. 115
5. मिश्र, डॉ. भुवनेश्वरनाथ माधव. मीरां की प्रेमासाधना, पृ. 208
6. चतुर्वेदी, परशुराम. मीरांबाई की पदावली, पृ. 145